कमलेश्वर के चन्दर पात्र पर महानगरीय संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन

अरविन्द कुमार
शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
पी. जी. कॉलेज, गाजीपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)

शोध सार

महानगरीय जीवन का अकेलापन, यांत्रिक जीवन, खालीपन, अपरिचय, अजनबीपन पूरे रोंये रेशों के साथ मुखरित हुआ है। मानव मूल्यों के विघटन और मनुष्य के मनुष्यत्व की तलाश के लिए बेचैन व्यक्ति की कहानी भी बनकर आई है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति, यांत्रिकता, स्वार्थपरता और कृत्रिमता आदि कुछ ऐसे कारण हैं जिनसे व्यक्ति का जीवन स्तर उसके आचार–विचार एवं सोचने की प्रक्रिया आदि सभी में परिवर्तन आ गया है। यह प्रभाव अधिकांशतः महानगरीय जीवन में अधिक दिखाई देता है। आज मनुष्य का दायरा हर दृष्टि से सीमित होता जा रहा है। वह आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। वह चाहता है कि दुनियाँ में जो हो रहा है, उसे होने दो। उसकी चिन्ता करना व्यर्थ है। उसे अपने लिए जीना है, अपने तक सीमित रहना है। उसे किसी अन्य के लिए सोचने की क्या आवश्यकता है। इसी दृष्टिकोण के कारण मनुष्य न केवल बाहर से बदला है, अपितु भीतर से भी बदल गया है। कुल मिलाकर यही कि उसका स्वरूप ही बदल गया है बदल रहा है।

मुख्य बिन्दु–

स्वार्थपरता, महानगरीय, दृष्टिकोण, प्रतिनिधित्व, माध्यम

शोध प्रपत्र

महानगरीय जीवन में व्याप्त अपरिचय, अनपहचान और रिक्तता व स्वार्थ आदि के भाव निरन्तर बढ़ रहे हैं। यही कारण है कि आज की व्यस्त जिन्दगी का मानव यह भी नहीं जानता कि उसके पड़ोस में कौन रहता है? इसके विपरीत गाँवों की स्थिति कुछ और ही है। वहाँ अभी तक लोगों में सौहार्द, स्नेह और परमार्थ आदि मानवीय गुण विद्यमान हैं। वहाँ एक का सुख सबका सुख और एक का दुःख सबका दुःख होता है। महानगरीय मानव की स्थिति सर्वथा इसके विपरीत है। चन्दर अपने पड़ोसी विशन कपूर को अभी तक चेहरे से नहीं जानता है जबकि वह तीन साल से उसके पड़ोस में रह रहा है।

"महानगरीय मानव की स्थिति है कि वह अविश्वास और सन्देह से मुक्त है। वहाँ कोई भी किसी पर विश्वास नहीं करता है। चारों ओर अविश्वास और संदेह के कीड़े जीवन को अन्दर से खोखला किये दे रहे हैं।"[1] मोटर गैरेज में जिस मैकेनिक को काम करते–करते सोलह वर्ष हो गये हैं, उस पर भी मालिक का विश्वास नहीं है। यह अविश्वास की चरम सीमा है। अविश्वास के साथ–साथ स्वार्थपरता की भावना भी महानगरीय मनुष्य में कूट–कूटकर भरी हुई दिखाई देती है। परिचय के अभाव में कोई किसी का काम नहीं करता है। ऐसे व्यक्तियों और मित्रों की संख्या यहाँ है ही नहीं। चन्दर का एक मित्र ऐसा ही है। वह चन्दर को काफी भी पिलाना चाहता है पर उसी के पैसों से। अंततः वह यह कहकर चला जाता है कि मैं पैसों का इन्तजाम करके आता हूँ। तुम चले मत जाना और फिर वह लौटकर नहीं आता है।

इतना ही नहीं मानवीय व्यवहार में भी आत्मीयता नहीं रह गयी है। वहाँ भी कृत्रिमता और औपचारिकता का साम्राज्य है। आत्मीय भी अनात्मीय और औपचारिक हो गये हैं। चन्दर की प्रिया इन्द्रा ऐसी ही हो गयी है। एक दिन जब चन्दर उससे मिलने जाता है तो वह आत्मीयता का व्यवहार न करके औपचारिकता का ही व्यवहार करती है। चन्दर को उसके व्यवहार में मात्र मेहमानबाजी दिखाई देती है। इससे वह पीड़ित होता है। इससे सिद्ध होता है कि आज का मानव लुप्त मानवीय गुणों की पीड़ा झेलता हुआ जी रहा है। चन्दर की घबराहट, उसकी पीड़ा और अकेलेपन की मनःस्थिति का कारण यही है।

"वह यहाँ परिचय, प्रत्यय और आत्मीयता के कण चाहता है। वह इन्हीं के लिए भटकता है, किन्तु अन्ततः उसे शंकित मनःस्थिति में भी संतोष की साँस पत्नी के पास ही मिल पाती है।"[2] इससे यह भी स्पष्ट होता है कि आज मनुष्य न केवल विकत–विगलित है, अपितु जीने के लिए जी रहा है। वस्तुतः पहचान प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक भूख बन गयी है। महानगरीय बोध से घिरा हुआ आदमी आज अपनेपन और पहचान के मूल्य को खो बैठा है। सब ओर से घबराकर वह उन दो आँखों की तलाश कर रहा है जो उसे पहचान, विश्वास, प्रेम और आत्मीयता की खुशबू दे सकें।

"कमलेश्वर ने इस कहानी में अपने ढंग से शहर की आत्मा को तलाश किया है। वे यह अनुभव कर रहे हैं कि शहर अपनी सभी दिशाओं को खो चुका है। यहाँ सबके सामने आते जाते हैं, पर कोई किसी से मिलकर भी नहीं मिलता है।"[3] चन्दर के माध्यम से शहर की इसी मूल्यहीनता को प्रस्तुत किया गया है। पन्द्रह वर्षों से ईमानदारी से नौकरी करने के बाद भी नौकर पर विश्वास नहीं करने वाला मोटर गैराज का मालिक, दो वर्ष से पड़ोस में रहने के बाद भी अपरिचित विशन कपूर, डाकखाने, बैंक और बगीचों में मिलने वाले अपरिचित लोग, यंत्रवत् जिन्दगी, खुद से मिलने में डर का अहसास, खण्डहरों के परिचय की तरह निरर्थक और वर्तमान से कटी हुई शिक्षा–पद्धति, निकट से परिचित और अपनत्व बताने वाली परन्तु एकदम अजनबी बनी हुई इन्द्रा, ग्राहक

मिलने तक परिचय बताने वाला सरदारजी चन्दर को आज दिन भर मिले हुए ये विविध व्यक्ति हैं।

इन सबकी आँखों में चन्दर को कोई भी परिचय, आत्मीयता और अपनत्व नजर नहीं आता है। यही मूल्यों का विघटन होने के बाद की स्थिति है। अपनत्व से कटकर सम्पूर्ण जिन्दगी को निरर्थक सी मानने वाला चन्दर शहर में हर बिन्दु पर मूल्यान्वेषी प्रतीत होता है। शहर में अमानुषता की स्थिति के कारण ही मूल्यों का विगलन हुआ है। स्थिति इतनी भयावह हो गयी है, मूल्य इस सीमा तक टूट चुके हैं कि मनुष्य मनुष्य का उपयोग कर रहा है। हर एक व्यक्ति दूसरे को सीढ़ी समझता है। फलस्वरूप जिन्दगी भयावह हो गयी है। यही मूल्यहीनता और भयावहता इस कहानी में व्यक्त है।

''सामाजिक मूल्य–विकृति इस सीमा तक बढ़ गयी है कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे के लिए जीना नहीं चाहता है। सभी अपने लिए जी रहे हैं–आस–पास से सैकड़ों लोग गुजरते हैं पर उसे कोई नहीं पहचानता है।''[4] हर आदमी या औरत लापरवाही से दूसरों को नकारता झूठे दर्प में दबा हुआ गुजर जाता है। मनुष्य यहाँ केवल अपने लिए जीते हैं और यह अपने लिए जीना एक नया सामाजिक मूल्य बन गया है।

कहानी में कमलेश्वर ने एक अन्य स्थान पर व्यंग्य से लिखा है– महिला अपना जूड़ा ठीक करते हुए औरों की ओर देख रही है और साथ वाला आदमी पानी के गिलास को देख रहा है। किसी के देखने में कोई मतलब नहीं है। आँखें हैं, इसलिए देखना पड़ता है। अगर न होतीं तो सवाल ही नहीं था। इन पंक्तियों में व्यंग्य के बावजूद लेखकीय आक्रोश भी व्यक्त हुआ है। यह आक्रोश सामाजिक मूल्यों के प्रति है।

''कहानी का शीर्षक ही व्यंजनागर्थी है। वहीं हमें इस कहानी की आंतरिकता से परिचित करा देता है। नयी कहानी में मानव मूल्यों के विघटन का चित्रण किया गया है।''[5] यह कहानी भी मानव मूल्यों के विघटन की कहानी है, किन्तु इसमें मूल्यों के विघटन के साथ–साथ इसमें खोये हुए मूल्यों का चित्रण भी किया गया है। इससे कहानीकार ने प्रकारान्तर से यह भी बता दिया है कि मूल्यों की तलाश आवश्यक है और मनुष्य उस तलाश में अपने को असमर्थ पा रहा है। दिशाओं के खोने के तीन अर्थ संकेतित किए जा सकते हैं। ये तीनों अर्थ निम्न प्रकार हैं–

- पहला संकेत तो यही है कि आज मनुष्य यांत्रिक जीवन जीते हुए इतना दिग्भ्रमित हो गया है कि वास्तविक मूल्यों की दिशाएँ उसे अज्ञात हैं। परिणामस्वरूप वह भटक गया है।
- दिशाओं के खोने का दूसरा अर्थ मानव अवस्था का होना है, जिजीविषा के सही अर्थ का मिट जाना है। आस्थाहीन जीवन भी मूल्यहीन ही होता है। फिर आस्था का अभाव ही मनुष्य को अपरिचय, अजनबीपन और अकेलेपन की स्थितियों से जोड़ देता है।

- तीसरा संकेत यह है कि मूल्यों से टूटकर मनुष्य अपनी खोई हुई दिशाओं को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नरत है। इस संकेत से यह कहानी सम्भावनाओं की कहानी प्रमाणित हो जाती है।

"कथानायक चन्दर के माध्यम से इन सभी स्थितियों और संकेत को स्पष्ट किया गया है। चन्दर दिल्ली जैसे महानगर में अपरिचित अनुभव करता है। वहाँ यदि कोई चीज परिचित है तो वह अपरिचय ही है।"[6] महानगर में भीड़ भले ही बढ़ गयी हो, पर मनुष्य के भीतर का इन्सान कहीं खो गया है। इन्सानियत का न रहना इस बात का प्रतीक है कि मित्रता, आत्मीयता, प्रेम, विश्वास जैसे भाव भी समाप्त हो गये हैं। इनके स्थान पर अपरिचय, स्वार्थ, कृत्रिमता, अजनबीपन और अकेलापन सीमातीत बढ़ गये हैं। अतः स्पष्ट ही कहानी यही संकेत देती है कि आज मन का मनुष्य कहीं खो गया है। उसकी तलाश अनिवार्य है। चन्दर इसी मनुष्यता को पाने के लिए दिल्ली महानगर में भटकता रहता है।

"वह लगातार एक रिक्तता का अनुभव करता रहता है। इसी रिक्तता में वह अनुभव करता है कि सर्वत्र अपरिचय, अविश्वास और अमानवीय सम्बन्धों व खोये हुए मनुष्यों का सैलाब आ गया है।"[7] यही कारण है कि चन्दर को दिशाएँ सब कहीं खोई हुई और मनुष्य अपरिचय व मनुष्य के सागर में डूबा हुआ लगता है। अतः कह सकते हैं कि सर्वत्र भौतिकता के कारण मनुष्य का भीतरी मनुष्य कहीं खो गया है। मनुष्य है कि लाख कोशिश करने पर भी उसे खोज नहीं पा रहा है। हर जगह खालीपन है। व्यक्ति अपनी दिशा में खो चुका है मूल्य छोड़ चुका है। चन्दर इन्हीं खोयी हुई दिशाओं व मानव मूल्यों की तलाश में है।

संदर्भ सूची

1. *डॉ. गोरधन सिंह शेखावत, हिन्दी कहानी, पृ. 316*
2. *एक दुनिया समानान्तर, रामकुमार, सेलर, पृ. 326*
3. *वहीं, पृ. 337*
4. *डॉ. बगान सिंह, आधुनिक साहित्य का इतिहास, पृ. 229*
5. *एक दुनिया समानान्तर, बदबू कहानी, पृ. 363*
6. *वहीं, पृ. 359*